Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

अभिनवशुकसारिका में वृत्तिविषय

राजेन्द्र प्रसाद
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र)

Article Info
Volume 4, Issue 6
Page Number : 91-96

Publication Issue :
November-December-2021

Article History
Received : 15 Nov 2021
Published : 30 Nov 2021

शोध–सारांश– वृत्ति के विषय को वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक साहित्य तक के प्रायः सभी ग्रन्थों में वर्णित किया गया है । इस वृत्तिविषय के वर्णन की परम्परा में आधुनिक काल के विद्वानों नें भी अपनी लेखनी से प्राचीन काल की वृत्तियों के साथ नवीन वृत्तियों को भी उल्लेखित किया है। जिनमें आधुनिक संस्कृत साहित्य के मूर्धन्यविद्वान, कवि, लेखक, समीक्षक, अभिनव रचनाधर्मी आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का नाम सर्वोपरि परिगणित किया जाता है। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने अपने साहित्य में अनेक नवीन वृत्तियों को उद्घाटित किया है, जो वैदिक काल, रामायण और महाभारत की वर्ण व्यवस्था से इतर वर्तमान समय के आधार पर वृत्ति के प्रकारों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है प्रथम शासकीय वृत्ति द्वितीय अशासकीय वृत्ति । आचार्य त्रिपाठी ने दोनों वृत्तियों का उल्लेख किया है जिनमें उनकी प्रसिद्ध कृतियां है– अभिनवशुकसारिका, विक्रमचरितम्, उपाख्यानमालिका, अन्यच्च, ताण्डवम्, अनुभववीथी, स्मितरेखा और आत्मनाऽऽत्मानम् आदि में इन वृत्तियों के विभिन्न प्रकार सर्वाधिक संख्या में प्राप्त होते है।

मुख्य शब्द– संस्कृत, वाङ्मय, वृत्ति, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, अभिनवशुकसारिका, गद्यसाहित्य।

संस्कृत वाङ्मय का प्रारम्भ वेदों के उद्भव काल से ही माना जाता है, जिसमें ऋग्वेद प्रथम है। उसके पश्चात् सभी वेदों, उपनिषदों, रामायण, और महाभारत आदि के साथ आधुनिक संस्कृत वाङ्मय के अनेकानेक साहित्यिक कृतियों की रचना हुई। जिनमें विभिन्न विषयों का उल्लेख प्राप्त होता है उनमें वृत्तिविषय को अति महत्वपूर्ण विषय के रूप में ग्रहण किया गया है। क्योंकि जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने के लिए एक वृत्ति का होना अति आवश्यक कहां गया है। मनुस्मृति में वृत्ति के दश प्रकार बताए गए है–

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

विद्या शिल्पं भृतिः सेवा गोरक्ष्यं विपणिः कृषिः।

धृतिर् भैक्ष्यं कुसीदं च दश जीवनहेतवः।।[1]

अर्थात् विद्या, शिल्पकर्म, वेतन, (मजदूरी), पशुपालन, व्यापार, खेती, धैर्य, भिक्षा मांगना, वृद्धिके लिए धन का प्रयोग, ये दश जीविका के साधन होते हैं।

जिसका वर्णन उपनिषदों में प्रमुख ईशावास्योपनिषद में भी आया है जिसमें कर्म (वृत्ति) करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहियें –

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँसमाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।[2]

जिसका स्थूल रूप वर्ण व्यवस्था के आधार पर निर्धारित वृतियों में दृष्टिगोचर होता है। जहां ब्राह्मण के लिए वेद – वेदांगों का अध्यायन करना अनिवार्य कहां वहीं अध्यायन – अध्यापन को वृत्ति का साधन गया है । जो महर्षि पतंजलि द्वारा विरचित महाभाष्य में कहां गया है –

ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गों वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च इति।[3]

क्षत्रियों को वृत्ति के लिए साहसिक कार्यों को करने की सलाह दी गई तथा मनुस्मृति में कहा गया है कि वेद में बताए गए व शास्त्र के विधानानुसार इस सम्पूर्ण लोक की न्यायपूर्वक सभी ओर से रक्षा करनी चाहिए –

सर्वस्याऽस्य यथान्यायं कर्तव्यं परिरक्षणम्।।[4]

इसी को नारदीयस्मृति में निम्नप्रकार से वर्णित किया गया है –

रक्षणं वेदधर्मार्थं तपः क्षत्रस्य रक्षणम्।।[5]

इसीप्रकार वैश्य के लिए वाणिज्य तथा व्यापार कार्य निर्धारित किया गया था जिसका वर्णन याज्ञवल्क्य स्मृति में भी प्राप्त होता है। (याज्ञ.1/119)शूद्र वर्ण को सेवाकार्य के लिए कहां गया। जबकी ''प्राचीन ग्रन्थों के अनुशीलन से तथा वर्तमान समय की परिस्थिति के अनुसार सम्पूर्ण जनसमुदय को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है – क्षत्र (योद्धा), ब्रह्मन् (पुरोहित) और विश (श्रमिक) । ''क्षत्र वर्ग समाज के नेता, शासक, राजा, एवं सरदार रहे , ब्रह्मन् अपनी बौद्धिक शक्ति के कारण राजा के सचिव, न्यायधीश तथा धार्मिक नेता या अनुशासक के पदों पर अधिष्ठित थे, और विश वर्ग के जन कृषक, व्यापारी के रूप में व्यापार, वाणिज्य एवं उद्योग धन्धों के द्वारा सम्पत्ति का उपार्जन करते रहे।''6 इस वर्ण व्यवस्था के अनुसार वृत्ति का निर्धारण इसलिए किया गया रहा होगा कि जब आपको अपने ही क्षेत्र में कार्य करने की अनिवार्यता रहेगी तो आप क्षेत्र के कार्यों में उत्कृष्टता को प्राप्त होंगे, जिससे बेरोजगारी जैसी समस्या का समाधान हो सकेगा। वस्तुतः वर्तमान में किसी वर्ण के लिए किसी प्रकार की वृत्ति का विधान नहीं है जिससे आज बेरोजगारी जैसी बिकराल समस्या का सामना सम्पूर्ण विश्व कर रहा है साथ ही अगर दृष्टिपात किया जाये तो जो व्यक्ति अपने पैतृक कार्यों को आधुनिक समय के साथ परिवर्तनशील बनाकर कर रहे है उनके यहां इस समस्या का अभाव दिखाई देता है।

अर्थशास्त्र के रचनाकार आचार्य कौटिल्य ने चार प्रकार की विद्याओं का उल्लेख किया है जिनमें आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति है–

''आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनोदण्डः।''[7]

जिनमें वार्ता (वृत्ति) को तीसरे स्थान में स्थापित किया है जो कृषि, पशुपालन और व्यापार ये वार्ता के विषय है–

''कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता।''[8]

वृत्ति के विषय को वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक साहित्य तक के प्रायः सभी ग्रन्थों में वर्णित किया गया है । इस वृत्तिविषय के वर्णन की परम्परा में आधुनिक काल के विद्वानों नें भी अपनी लेखनी से प्राचीन काल की वृत्तियों के साथ नवीन वृत्तियों को भी उल्लेखित किया है। जिनमें आधुनिक संस्कृत साहित्य के मूर्धन्यविद्वान, कवि, लेखक, समीक्षक, अभिनव रचनाधर्मी आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का नाम सर्वोपरि परिगणित किया जाता है। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने अपने साहित्य में अनेक नवीन वृत्तियों को उद्घाटित किया है, जो वैदिक काल, रामायण और महाभारत की वर्ण व्यवस्था से इतर वर्तमान समय के आधार पर वृत्ति के प्रकारों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है प्रथम शासकीय वृत्ति द्वितीय अशासकीय वृत्ति । आचार्य त्रिपाठी ने दोनों वृत्तियों का उल्लेख किया है जिनमें उनकी प्रसिद्ध कृतियां है – अभिनवशुकसारिका, विक्रमचरितम्, उपाख्यानमालिका, अन्यच्च, ताण्डवम्, अनुभववीथी, स्मितरेखा और आत्मनाऽऽत्मानम् आदि में इन वृत्तियों के विभिन्न प्रकार सर्वाधिक संख्या में प्राप्त होते है। अभिनवशुकसारिका में वृत्तिविषय का सर्वाधिक वर्णन प्राप्त होता है उसके साथ ही अन्य ग्रन्थों में भी वृत्तियों का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। जिनमें प्रथम शासकीय वृत्तियों का वर्णन निम्न प्रकार से कर सकते है –

शासकीय वृत्ति – शासकीय वृत्तियों के अन्तर्गत वे वृत्तियां आती है जो शासन के द्वारा संचालित की जाती है तथा उसके अन्तर्गत कार्य करने को अजीविका के लिए वेतनादि प्रदान करते हैं।

प्रोफेसर – वैदिक काल में शिक्षा व्यवस्था गुरुकुल प्रणाली के अनुसार चलती थी और शिष्यों द्वारा प्राप्त गुरु दक्षिणा से ही गुरु अपनी अजीविका को संचालित करते थे, किन्तु वर्तमान समय में गुरुकुल परम्परा की जगह विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों ने ग्रहण कर लिया है, जिनमें शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रोफेसरों की नियुक्ति की जाती है जो आधुनिक वृत्तियों के साथ ही शासकीय वृत्ति में भी परिगणित है । जिसका उल्लेख आधुनिक संस्कृत साहित्य के आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने अपने गद्यसाहित्य अभिनवशुकसारिका में निम्नप्रकार किया है – **''स विश्वविद्यालये प्राध्यापकत्वात् प्रकृष्टश्चासौ उपेश्वर इति निरुक्त्या प्रोपेश्वरपदवीम् आङ्ग्लभाषायां प्रोफेसर इति संज्ञां धारयन्नपि ईश्वरे सर्वथा अनास्थाशीलः दर्शनशास्त्रमध्यापयति चार्वाकदर्शने वैदेशिके मार्क्सवादे च प्रख्यापयत्यात्मनो विशेषज्ञताम्।''**[9]

अर्थात् वे विश्वविद्यालय में प्राध्यापक या प्रोफेसर थे । प्रोफेसर का संस्कृतिकरण करें, तो शब्द बनेगा प्रोपेश्वर। पर प्रोफेसर ईश्वर के समीप जो हो, वह उपेश्वर है और प्रकृष्ट उपेश्वर प्रोपेश्वर इन्द्रमौलि की ईश्वर में कोई आस्था नहीं थी । विश्वविद्यालय में वे चार्वाक – दर्शन पढ़ाते थे और अपने आपको मार्क्सवाद का विशेषज्ञ बताते थे।

शिक्षिका – विद्यालय, माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाने वाली महिलाओं को शिक्षिका शब्द से सम्बोधित किया जाता है। वर्तमान समय की वृत्तियों में महिलाओं के लिए सबसे अच्छी वृत्ति मानी जाती है अपितु आधुनिक काल की महिलाओं ने सर्वत्र अपनी प्रतिभा के द्वारा उच्च पदों को प्राप्त किया है। आचार्य त्रिपाठी ने शिक्षिका के द्वारा परिवार के भरण – पोषण में पति के सहयोग को दिखाया है तो वहीं पति का पत्नी के कम वेतन प्राप्त होने का क्षोभ भी है जो दृष्टिगत होता है – **''एतावद् उच्चाध्ययनं कृतम्, वृत्तिस्तु तोषकरी न प्राप्त । आकाशवृत्तिरहम् , कदाचितु अनभ्रवृष्टिरिव लक्षमुद्रामिता आदेशा प्राप्यन्ते, कदाचिद् भवति शुष्को निदाघः। भार्या कामं शिक्षिका वर्तते। तस्या अत्यल्पं वेतनम्।''**[10]

अर्थात् पढ़ाई की, पर ढ़ग की नौकरी न मिली। हमारा काम ऐसा है कि कभी तो बिना बादल की बरसात की तरह लाखों के आर्डर मिल जायें, कभी सूखा का सूखा ही । पत्नी टीचर है। उसकी तनख्वाह भी थोड़ी ही है।

आई. ए. एस स्तुति – आधुनिक समय की वृत्तिविषयों में सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सम्मानीय वृत्ति मानी जाती है। इस वृत्ति के लिए अत्यन्त कठिन प्रतिस्पर्धा को पास कर प्राप्त किया जाता है । उसके बाद देश के किसी राज्य में जिलाधीश के पद में कार्य करते हैं। कवि की दृष्टि में तो वह आई. ए. एस स्तुति का पात्र है और उसकी स्तुति भी करते हैं । व्यक्ति का आई. ए. एस में होने के बाद उसकी मुख की कांन्ति के समक्ष सूर्य और चन्द्रमा भी कम प्रकाशमान दिखाई देते हैं। यथा कथाकर कहते है कि आई. ए. एस स्तुतिः काव्य में इसप्रकार स्तुति की गई है –

''मन्त्री मन्त्रित्वमुक्तः स्यान्नेता चानेतृतां व्रजेत्।
आई–ए–एसः परं तिष्ठेत् पदे हिमगिरिर्यथा।।
पर्वतं परमाणुत्वं नयन् पर्वततामणुम्।
आई–ए–एसो ध्रवं शास्ति देशं राजा प्रतापवान्।।''[11]

अर्थात् मन्त्री अपने पद से हट जाते हैं, नेता नेता नहीं रह जाते । पर हिमालय की तरह आई. ए. एस आसन पर अडिग बना रहता है। असली राजा तो आई. ए. एस ही होता है। वह चाहे तो पर्वत को राई और राई को पर्वत कर दे, देश का सारा तन्त्र रोक दे।

लिपिक – लिपिक का पद शासकीय वृत्ति के अन्तर्गत आता है। किसी संस्थान का सम्पूर्ण कार्यालयी कार्य लिपिक के पास होता होता है –

''विदितं तेन यत् फरीदखान इदानीं जाबालिपुरे विद्युद्विभागे लिपिको वर्तते। तत्र गत्वा फरीदखानेन वार्तामकरोत्।
फरीदखान आह – भद्र ! तदानीं पित्रोर्मोहेन मया तथा व्यवसितम् आत्मनि सरलायां च महानत्याचारो व्यधायि।''[12]

अर्थात् पता चला कि फरीदखान नाम का एक अधिकारी जबलपुर में बिजली विभाग में है। उसने वहीं जाकर फरीदखान से बात की। फरीदखान कहने लगा – भाई, उस वक्त माँ – बाप के मोह में मैंने वैसा किया । अपने ऊपर और सरला के ऊपर भी बड़ा अत्याचार किया।

अभियन्ता – अभियन्ता जिसको अंग्रेजी में इंजीनियर कहतें हैं । यह पद भी शासकीय वृत्ति के अन्तर्गत लिया जाता है । वर्तमान में अनेक निजीसंस्थानों में भी इनकी नियुक्ति बहु संख्या में की जा रही है। इंजीनियर के क्षेत्र भी अनेक है जिसमें विद्युत, सिविल आदि का नाम आता है–

''तदानीमेव ज्ञातं यत् तस्य सहाध्यायी सुशील इहैव विद्यद्विभागे प्रमुखोऽभियन्ता वर्तते। रमेशः सुशीलं दृष्टवान्। स तु बहोः कालादनन्तरं प्रेष्ठं सुहृदं सङ्गत्य नितरां प्रसन्नः।''[13]

अर्थात् उसी समय ज्ञात हुआ कि उसके साथ पढ़ने वाला सुशील ही विद्युत विभाग का प्रमुख इंजीनियर है। रमेश सुशील को देखा। वह तो बहुत कालान्तर के बाद अपने प्रिय सुहृद मित्र का सानिध्य प्राप्त हुआ तो अत्यधिक प्रसन्नता हुई।

भारतीयप्रशासनिकसेवा – यह सेवा सर्वोत्तम सेवाओं में परिगणित की जाती है। जिसमें आई. ए. एस, आई. पी. एस और आई. एफ. एस आदि प्रथम श्रेणी की नौकरियां इसी भारतीय प्रशासनिक सेवा के अन्तर्गत आती है। जिसका आधुनिक समय में अनेक आचार्यो ने वर्णन किया है। जिनमें आचार्य त्रिपाठी ने भी वर्णन किया है –

''सुबोधेन अखिल–भारतीय–प्रशासनिकसेवाप्रतियोगितापरीक्षा दत्ता। तस्यां स उत्तीर्णः। ततश्च भारतीयप्रशासनिकसेवायामसौ अधिकारी संजातः।''[14]

अर्थात् सुबोध ने अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा की प्रतियोगिता परीक्षा दी। उसमें वह उत्तीर्ण हो गया। कुछ समय बाद वह भारतीय प्रशासनिकस सेवा में अधिकारी बन गया।

न्यायाधीश – न्यायाधीश का पद तो प्राचीन काल से ही न्याय व्यवस्था का प्रमुख आधार रही है और वर्तमान समय में भी न्याय की बागडोर इन्हीं न्याय के कर्ताओं के करकमलों में है। यदि ये न हो तो समाज में अव्यवस्था फैल जयेगी –

"तदा मध्ये मोहिनी समुत्थाय न्यायाधीशमवादीत् – अहं सुबोधकुमारमहोदयस्य भार्या। अहमत्र किमपि आवेदनं कर्तुकामाऽस्मि।

तर्हि अत्र आगत्य उच्यताम्।

साक्षिकाष्ठगृहकमेत्य मोहिनी अवदत् – न्यायाधीशमहोदयाः, इयं या कल्याणी वर्तते, तस्याः चिकित्सापरीक्षणं कार्यम्। सा वस्तुतः स्त्री एव नास्ति। सा वर्तते तृतीया प्रकृतिः। अस्या एतद्रहस्यमहमजानाम् । नो चेत् प्रत्ययः, अस्याः चिकित्सापरीक्षणं सम्यक् कार्यताम्।"[15]

अर्थात् तभी मोहिनी ने उठकर न्यायाधीश से कहा – मैं सुबोधकुमार जी की पत्नी हूँ। मैं कुछ कहना चाहती हूँ'।

न्यायाधीश ने कहा –' आप गवाह के कठघरे में आकर कहिये'।

कठघरे में आकर मोहिनी ने कहा – मेरा कहना सिर्फ यह है कि यह जो कल्याणी है, इसकी मेडिकल जाँच कराई जाय। वास्तव में वह स्त्री नहीं है। वह हिजड़ा है। मुझे इसका यह रहस्य मालूम है।

प्राध्यापक – विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने वाले शिक्षकों को प्राध्यापक कहा जाता है तथा अंग्रेजी में प्रोफेसर कहा जाता है। जिसका वर्णन उपर्युक्त किया गया है। यह वृत्ति शासकीय वृत्ति में सम्मानीय वृत्ति है जो वैदिक काल से लेकर अभी तक प्रतिष्ठा को प्राप्त है –

"अथासौ अमेरिकादेशे स्वगवेषणाभिस्तासु तासु शोधपत्रिकासु अनुसन्धानकार्यप्रकाशनैः ख्यातेः कामपि परां काष्ठामगात् । तत्रैव शिकागोविश्वविद्यालये तस्मै प्राध्यापकपदे नियुक्तिर्दीयते स्म, परन्तु स्वदेशमागत्य स्वीयस्यानुसन्धानस्य तत्र देशहितार्थं विनियोगं करिष्ये इति धियासौ तत्र सेवाकार्यं न वरममंस्त।"[16]

अर्थात् वह अमेरिका देशे में अपने खोज से उसका अनुसन्धानकार्य एक प्रतिष्ठित शोधपत्रिका में प्रकाशित हुआ जिससे उसकी ख्याति फैल गयी और वहीं शिकागोविश्वविद्यालय में उसको प्राध्यापक पद में नियुक्ति दे दी गयी। परन्तु अपने देश आकर अपने अनुसन्धान से देशहित के लिए कुछ सेवाकार्य के उद्देश्य से उसने प्राध्यापक पद स्वीकार नहीं किया।

"अतः स्वप्रतिभयैव इदानीमसौ महाविद्यालय एकस्मिन् प्राध्यापकपदे प्रतिष्ठितः, रामदयालुना मनागपि साहाय्यं यथा तथा तस्य विहितम्।"[17]

अर्थात् अतः वह अपनी प्रतिभा से इससमय एक महाविद्यालय में प्राध्यापक के पद पर स्थित है।

अशासकीयवृत्ति – अशासकीय वृतियों का वर्णन भी आधुनिक आचार्य राधावल्लभत्रिपाठी ने किया है जिनमें से प्रमुख है – महानुद्योगपति का वर्णन जी. एम. कम्पनीज, करवाहनचालक, भोजन निर्मात्री, उर्वरकनिर्माण व्यवसाय, कृषि, सॉफ्वेयरनिर्माण उद्योग, चायवाला, त्रिचक्रवाहनचालक आदि वत्तियों का कथाकार ने बहुशः उल्लेख किया है।

महानुद्योगपति का वर्णन – भारत में उद्योग की परम्परा प्राचीन काल से प्राप्त होती है। वर्तमान समय में उद्योगों के मध्यम से ही राष्ट्र की उन्नति का अनुमान लगाया जाता है जिसके प्रभाव से कथाकार भी अछूता नहीं रहा उन्होंने अपने ग्रन्थ में जी.एम.कम्पनीज का नामोल्लेख किया है जो अशासकीयवृत्ति के अन्तर्गत आती है । जो मुम्बई की प्रतिष्ठित

कम्पनी है तथा जिसके मलिक घूरामल जी उन्हीं के नाम पर कम्पनी का नामकरण हुआ है किन्तु उन्हें अपने नाम को कहने व बताने में बहुत लाज आती है इसलिए वह अपना नाम जी.एम. अग्रवाल बताते है –

स पितृभ्यां दत्तं घूरामलेति नाम लज्जास्पदं मत्वा सर्वत्र जी.एम. अग्रवाल इति नाम व्यवहरति। जी.एम.कम्पनीज इत्याख्यया तस्य चलन्ति विविधा निर्माण्यः।[18]

कारवाहनचालक –

सन्दर्भ ग्रन्थसूची –

1. मनुस्मृति 10/116
2. ईशोपनिषद् 2
3. महाभाष्य
4. मनुस्मृति
5. नारदीयस्मृति
6. कौटिलीय अर्थशास्त्र (वाचस्पति गैरोला) भूमिका पृ. 51
7. कौटिलीय अर्थशास्त्र 1/3/2
8. कौटिलीय अर्थशास्त्र 1/3/1
9. अभिनवशुकसारिका पृ. 3
10. अभिनवशुकसारिका पृ. 35
11. अभिनवुकसारिका पृ. 50
12. अभिनवशुकसारिका पृ. 53
13. अभिनवशुकसारिका पृ. 53
14. अभिनवशुकसारिका पृ. 58
15. अभिनवशुकसारिका पृ. 62
16. अभिनवशुकसारिका पृ. 80
17. स्मृतिरेखा (प्रकाशन – संस्कृत भारती) पृ. 9
18. अभिनवशुकसारिका पृ. 1